(Qualities of A Commerce Teacher)

अन्य विषयों की भाँति वाणिज्य शिक्षा क्षेत्र में वाणिज्य अध्ययन का एक विशेष स्थान है। वाणिज्य अध्यापक ही छात्रों को उपयुक्त विषय चयन में सहायता देता है। उनका मूल्यांकन करके उनकी योग्यता और अयोग्यता का पता लगाकर उनका सही मार्गदर्शन करता है। वही वाणिज्य शिक्षण के लिए पाठ-योजना बनाता है, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन करता है, विभिन्न उपकरणों की सूची बनाता है, उनका प्रयोग करता है, व्यावसायिक समाज से सम्पर्क रखता है और समय-समय पर छात्रों को वाणिज्य सम्बन्धी निर्देश देता है। ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले अध्यापक में निःसंदेह कुछ गुण होने चाहियें। एक अच्छे वाणिज्य शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहियें—

शिक्षक का व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण (Personality Traits of Teacher)— शिक्षा प्रक्रिया की सफलता अध्यापक पर निर्भर करती है। जहाँ शिक्षक का ज्ञान और उसके कौशल छात्रों को प्रभावित करते हैं, वहीं उसका व्यक्तित्व भी उन्हें प्रभावित करता है।

डब्ल्यू० एच० रायबर्न के मतानुसार, **''शिक्षण प्रक्रिया की सफलता अध्यापक पर निर्भर करती है, उसके ज्ञान और उसकी योग्यता पर, परन्तु विशेष रूप से उसके साधारण व्यक्तित्व, जीवन सम्बन्धी गुण और चरित्र पर निर्भर करती है।''**

Scanned by TapScanner

Qualities of Commerce Teacher

General (सामान्य)

1. सहानुभूति एवं व्यवहार (Sympathetic & Behaviour)
2. नेतृत्व क्षमता (Ability to lead)
3. स्पष्टवादिता (Frankness) (अनावृत तथा अस्पष्ट बातचीत की)
4. अभिव्यक्ति की शक्ति Power of Expression
5. स्वस्थ व्यक्तित्व (Healthy personality) (शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक दृष्टिकोण से समायोजित)
6. आत्मविश्वास (Self Confidence)
7. अध्ययनशील (Studious)
8. निष्पक्ष दृष्टिकोण (Impartial Attitude)

Specific (विशेष)

1. शिक्षण कला में प्रवीण
2. आर्थिक समस्याओं का ज्ञान
3. प्रयोगात्मक ज्ञान
4. मनोविज्ञान का ज्ञान
5. व्यावसायिक प्रशिक्षण
6. शिक्षण व्यवसाय के प्रति निष्ठा भाव
7. विषय का ज्ञान

Scanned by TapScanner

वाणिज्य अध्यापक की सामान्य योग्यतायें
(General Abilities of Commerce Teacher)

(1) सहानुभूति एवं व्यवहार (Sympathetic and Behaviour)—छात्रों में वाणिज्य के प्रति रुचि तथा व्यावसायिक अभिरुचि का विकास तभी सम्भव है, जबकि उनकी जिज्ञासा की पूर्ति हो। शिक्षक तथा छात्रों में सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों का होना विभिन्न विषयों की अपेक्षा वाणिज्य में अत्यन्त आवश्यक है। यदि शिक्षक का व्यवहार उसके छात्रों के प्रति बहुत ही कठोर हो, तो छात्र सदैव

Scanned by TapScanner

भयभीत रहेंगे। इसलिए शिक्षक को अपने छात्रों से प्रेमपूर्ण तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिये, जिससे कि छात्रों के लिए एक हितैषी, पथप्रदर्शक तथा सच्चे मित्र के उत्तरदायित्व का ठीक प्रकार से निर्वाह कर सके तथा इस कारण छात्र बिना संकोच के अपनी समस्याओं को उसके समक्ष समाधान करने के लिए प्रस्तुत कर सकें।

(2) नेतृत्व क्षमता (Ability to Leader)—शिक्षा की उपादेयता नेतृत्व क्षमता के द्वारा गृहीत मार्ग पर निर्भर करती है। शिक्षक ही इसे सही दिशा प्रदान कर सकता है। इसलिए छात्रों की शक्ति को दिशाविहीन होने से रोकने के लिए और उसकी वांछित धाराओं में मार्ग-प्रदर्शन के लिए शिक्षक में अच्छे नेतृत्व का गुण भी होना अत्यन्त आवश्यक है। इसी के द्वारा वह छात्रों की अनुशासनहीनता को नियन्त्रित करने में समर्थ हो सकेगा।

(3) स्पष्टवादिता (Frankness)—शिक्षक किसी भी वस्तु या सिद्धान्त को तब तक सत्य मानने को तैयार नहीं होता, जब तक कि वस्तुनिष्ठ ढंग से उसको सत्यापित न कर ले। उनका सम्बन्ध 'क्या है' अथवा 'क्या होना चाहिये' से नहीं है। इस दृष्टिकोण के द्वारा उनमें स्पष्टवादिता का होना बहुत ही आवश्यक गुण है। शिक्षक को छात्रों के समक्ष दैनिक शिक्षण में भी अपने इस गुण को निरन्तर बनाये रखना चाहिये। इसके लिऐ उसे भ्रमपूर्ण तथा अस्पष्ट वार्तालाप नहीं करना चाहिये।

(4) अभिव्यक्ति की शक्ति (Power of Expression)—यदि शिक्षक अपनी बात को छात्रों के समक्ष उचित प्रकार से रखने की समर्थ नहीं है, तो चाहे वह शैक्षिक दृष्टिकोण से कितना भी योग्य तथा बुद्धिमान क्यों न हो, वह सफल शिक्षक नहीं होगा। पाठ्यक्रम को क्रमबद्ध कर सकने तथा भाषा पर नियन्त्रण की क्षमता अभिव्यक्ति के अन्तर्गत आती है। इसीलिए शिक्षक की भाषा छात्रों के स्तर के अनुरूप होनी चाहिये तथा उसके विचार क्रमबद्ध होने चाहियें।

(5) स्वस्थ व्यक्तित्व (Healthy Personality)—व्यक्तित्व किसी भी पक्ष चाहे वह शारीरिक हो या बौद्धिक से सम्बन्धित नहीं होता। स्वस्थ व्यक्तित्व का अर्थ ऐसे व्यक्तित्व से है जो शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक दृष्टिकोण से समायोजित हो। स्वस्थ व्यक्तित्व का छात्रों के ऊपर प्रत्यक्ष पड़ता है। शिक्षक के इस गुण का छात्र अप्रत्यक्ष रूप से अनुकरण करने लगते हैं।

(6) आत्मविश्वास (Self-confidence)—आत्मविश्वास ऐसा गुण है, जिसका शिक्षक में होना बहुत आवश्यक है। वाणिज्य में कभी-कभी शिक्षक के सामने इस प्रकार की समस्याओं का उत्पन्न होना आवश्यक है जिनका समाधान उसने पहले से नहीं सोचा हो। ऐसी परिस्थिति में आत्मविश्वास के द्वारा ही उन परिस्थितियों के समायोजन में सहायता मिलती है।

(7) अध्ययनशील (Studious)—किसी भी अन्य विषय की अपेक्षा वाणिज्य विषय में प्रगति अत्यन्त तीव्रता से हो रही है। यह प्रगति इतनी तीव्र है कि इसके साथ ज्ञानार्जन का सामंजस्य रखना कठिन हो रहा है। एक वाणिज्य अध्यापक के लिए तो यह और भी आवश्यक है कि वह वाणिज्य की नवीनतम खोजों से परिचित हो। तभी वह अपने छात्रों को इस तेजी से परिवर्तनशील समाज के साथ समायोजित करा सकने में सक्षम हो सकेगा। वैसे भी वाणिज्य किसी भी तथ्य व सिद्धान्त को सदैव के लिये अपरिवर्तनशील नहीं मानता है। समय, परिस्थिति एवं नवीन ज्ञान के आधार पर उसका स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। इस कारण वाणिज्य अध्यापक को भी किसी भी सिद्धान्त को सदैव के लिये सत्य व अपरिवर्तनशील नहीं मानना चाहिये और यह तभी सम्भव है जबकि वह सदैव नवीन ज्ञान के प्रति सजग रहे, अध्ययनरत रहे। वाणिज्य अध्यापक को चाहिये कि वह वाणिज्य विषय पर प्रकाशित होने वाली नवीन ज्ञान तथा नई खोजों सम्बन्धी प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करे।

(8) निष्पक्ष दृष्टिकोण (Impartial Attitude)—वाणिज्य शिक्षक छात्रों में परिस्थितियों को निष्पक्ष रूप से अवलोकन करने की आदत डालता है। यदि शिक्षक में निष्पक्षता की कमी है तथा वह स्वयं ही पूर्वाग्रहों से ग्रसित है, तो वह छात्रों में इस गुण का विकास करने में पूरी तरह असमर्थ रहेगा।

विशिष्ट योग्यतायें
(Specific Abilities)

(1) शिक्षण कला में प्रवीण—शिक्षण कला का ज्ञान एक सफल अध्यापक को प्रमुख विशेषता होती है। प्रगतिशील शिक्षण-विधियों में वह दक्ष होना चाहिए। **प्रो० रायबर्न** के शब्दों में, "अध्यापक को बाल-अध्ययन में उत्साहित, अपने विषय में उत्साहित एवं विधि के सम्बन्ध में उत्साहित होना आवश्यक है।" उपयुक्त शिक्षण विधि के अभाव में उचित शिक्षा देना कठिन है। शिक्षा के उद्देश्य चाहे कितने ही महान् क्यों न हों, जब तक अध्यापक उपयुक्त विधि का प्रयोग नहीं करेगा, तब तक वह उन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकेगा।

Scanned by TapScanner

(2) आर्थिक समस्याओं का ज्ञान—वाणिज्य-शिक्षा शिक्षा प्रक्रिया का वह पहलू है जो एक ओर व्यापारिक धन्धों की व्यावसायिक तैयारी अथवा वाणिज्य-शिक्षण से सम्बन्धित धन्धों के लिए तैयारी से सम्बन्धित है तथा दूसरी ओर वाणिज्य-सम्बन्धी सूचनाओं एवं अभिज्ञताओं से सम्बन्धित है, जो प्रत्येक नागरिक और उपभोक्ता के लिए आर्थिक और वाणिज्यिक वातावरण को ठीक प्रकार से समझने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। वाणिज्य के शिक्षक को समाज व राष्ट्र की आर्थिक स्थिति व उनकी समस्याओं का तात्कालिक ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि वाणिज्य-शास्त्र एक व्यावहारिक व गतिशील विषय है। इसका सम्बन्ध समाज, राष्ट्र व अन्तर्राष्ट्रीय जगत के आर्थिक पहलू से जुड़ा होता है। यह छात्रों को व्यापार, उद्योग, योजनाओं के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभावों का भी अध्ययन कराता है। वाणिज्य के अध्यापक को समाज के सभी वर्गों के लोगों की आर्थिक समस्याओं का भी ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। वाणिज्य के अध्यापक को ग्रामीण एवं शहरी वातावरण व उनकी आर्थिक समस्याओं की भी जानकारी होनी चाहिए।

(3) प्रयोगात्मक ज्ञान—वाणिज्य एक ऐसा विषय है, जिसके लिये केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। इस विषय में अध्यापक को प्रयोगात्मक ज्ञान पर भी उतना ही अवलम्बित करना पड़ता है। यह एक व्यावहारिक विषय है, अतः इस विषय के अध्यापक को अपने विषय में अनेकानेक पक्षों के उचित स्पष्टीकरण के लिए प्रयोगों की सहायता लेनी पड़ती है। व्यापार पद्धति में सेविंग बैंक खाता समझाते समय इससे सम्बन्धित फॉर्म दिखाकर उन्हें उनसे भरवाकर समझाना पड़ता है। इसी प्रकार औद्योगिक प्रतिष्ठानों व उनके क्रियाकलापों को व्यवहार में दिखाकर समझाने पर ही व स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं। अतः वाणिज्य के लिए सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान व उसका उचित प्रयोग भी आवश्यक है, तभी वह अपने छात्रों को गतिशील, आधुनिक, व्यावहारिक व प्रयोगात्मक ज्ञान देने में सफल हो सकता है।

(4) मनोविज्ञान का ज्ञान—व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण छात्रों की रुचियों, मानसिक क्षमताओं, शारीरिक विशेषताओं तथा उनके व्यक्तित्व में पृथकता आ जाती है। अध्यापक को सफल शिक्षण के लिए व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ज्ञान आवश्यक है। सफल शिक्षक छात्रों को उनकी व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। अध्यापक में व्यक्तिगत क्षमताओं को समझने की योग्यता होनी चाहिये। इसके लिए अध्यापक को शिक्षा-मनोविज्ञान व बाल-मनोविज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान होना आवश्यक है। जिस अध्यापक को ऐसा ज्ञान होता है, वह छात्रों के साथ उचित व्यवहार करता है। मनोविज्ञान का ज्ञाता होने पर ही वाणिज्य का अध्यापक विभिन्न आयु व स्तर के छात्रों को उनकी प्रवृत्तियों के आधार पर उपयुक्त शिक्षा प्रदान कर सकेगा। इसके आधार पर वाणिज्य का अध्यापक विभिन्न विधियों व प्रविधियों का उपयोग कर सकता है तथा विषय को सुरुचिपूर्ण बना सकता है। इस प्रकार वह छात्रों के दृष्टिकोण को अनुकूल बना सकता है तथा विषय को सार्थक बना सकता है।

(5) व्यावसायिक प्रशिक्षण—वाणिज्य शास्त्र के अध्यापक को प्रशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। आधुनिक समय में शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये तथा शिक्षा क्षेत्र में व विषय क्षेत्र में हो रहे नवीन प्रयोग के प्रति जानकारी रखने के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण आवश्यक है। उचित व्यावसायिक प्रशिक्षण के बिना राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति करना सम्भव नहीं हो सकता है और न शैक्षिक कार्य सफल हो सकते हैं। इसके साथ-साथ गुणात्मक सुधार लाने के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण आवश्यक माना जाता है। वाणिज्य अध्यापक के लिए आवश्यक दक्षता व कौशल के विकास के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने में क्षेत्रीय महाविद्यालयों ने सराहनीय कार्य किया है क्योंकि ये वाणिज्य शिक्षण के लिये विशेष पाठ्यक्रम संचालित कर रहे हैं तथा विशेष शिक्षण पद्धतियों के साथ-साथ आवश्यक ज्ञान व कौशल पर भी बल दे रहे हैं। वाणिज्य-शिक्षण के पाठ्यक्रम को और आधुनिक व प्रगतिशील बनाने की आवश्यकता है। व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से है—

(i) प्रशिक्षण से व्यावसायिक जागरूकता व दक्षता प्राप्त होती है।
(ii) बाल-मनोविज्ञान का ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे ये छात्रों की रुचि, स्तर व योग्यतानुसार व्यवहार करते हैं।
(iii) पाठ को योजनाबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना सीखते हैं।
(iv) व्यावसायिक कुशलता बढ़ती है। विभिन्न विधियों, युक्तियों व प्रविधियों से परिचित होते हैं।
(v) अध्यापक में अनुशासन बनाये रखने का गुण आता है।
(vi) राष्ट्रीय आकांक्षाओं व आवश्यकतानुसार कार्य कर सकते हैं।
(vii) सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक तत्त्वों का गुण विकसित हो जाता है।
(viii) छात्रों की उपलब्धियों के निर्धारण व मूल्यांकन की योग्यता आती है।

Scanned by TapScanner

(6) शिक्षण व्यवसाय के प्रति निष्ठा भाव—अध्यापन कार्य एक व्यवसाय नहीं है। यह तो स्वेच्छा पर आधारित एक नैतिक कार्य है। अतः एक अच्छे अध्यापक की सर्वप्रथम शर्त यह है कि वह शिक्षक के अतिरिक्त और कुछ न हो। उसमें अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति रुचि व निष्ठा भावना होनी आवश्यक है। जो व्यक्ति शिक्षण के प्रति प्रेम व निष्ठा नहीं रखता, उसे कभी भी अध्यापन कार्य स्वीकार नहीं करना चाहिये। शिक्षा जगत् को ऐसे व्यक्तियों से सर्वाधिक क्षति उठानी पड़ती है जो अनिच्छा से अध्यापक बन जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों का मन अध्यापन कार्य में कभी नहीं लगता है। ऐसे व्यक्ति अपना कार्य न्यायोचित ढंग से सम्पन्न नहीं कर पाते हैं। उसमें चाहे अन्य कितने ही गुण क्यों न हो, इस गुण के अभाव में वह कभी भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। वाणिज्य के अध्यापक में भी जब तक अपने व्यवसाय के प्रति निष्ठा भावना नहीं होगी, वह शिक्षण कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पायेगा। व्यवसाय के प्रति निष्ठा भावना ही वाणिज्य के अध्यापक को अपने शिक्षण कार्य में दक्ष एवं कुशल बनाती है। वाणिज्य के अध्यापक में अन्य गुणों के प्रदर्शन तथा प्रयोग के लिए व्यावसायिक निष्ठा का होना आवश्यक है।

(7) विषय का ज्ञान—शिक्षण व्यवसाय के प्रति निष्ठा भावना के साथ-साथ वाणिज्य-शिक्षण में वाणिज्य के प्रति भी निष्ठा भावना होनी आवश्यक है। यदि शिक्षक में विषय के प्रति निष्ठा नहीं है, तो वह विषय शिक्षण में कभी रुचि नहीं लेगा। वाणिज्य शिक्षक को विषय के प्रति निष्ठा के साथ ही साथ विषय का विस्तृत एवं व्यापक ज्ञान होना चाहिये। वाणिज्य के अध्यापक को तत्सम्बन्धी सभी विषयों के आधारभूत नियमों व तथ्यों का ज्ञान होना आवश्यक है। यदि उसे इनका ज्ञान नहीं है, तो वह अपने छात्रों की जिज्ञासाओं को शान्त नहीं कर पायेगा। अध्यापक नियमों के पर्याप्त ज्ञान के अभाव में कक्षा को विश्वास के साथ नहीं पढ़ा पायेगा। वह छात्रों को ऐसे अवसर नहीं दे पायेगा, जिससे छात्र प्रश्न पूछकर शंकाओं का समाधान कर सकें। वाणिज्य के अध्यापक को अपने विषय के उपविषयों का भी सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिये। शिक्षण के स्तर में सुधार लाने के लिए तथा विषय के शिक्षण से सम्बन्धित कौशल का विकास करने के लिए विषय का उचित ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है, ताकि वह विषय के प्रत्येक पक्ष की अधिकारपूर्वक व्याख्या कर सके। वाणिज्य एक विस्तृत विषय है। इसका क्षेत्र बड़ा ही व्यापक है। इसीलिए उसे विभिन्न पुस्तकों के साथ-साथ समाचार-पत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपने ज्ञान को समृद्ध व आधुनिक बनाने का सतत् प्रयास करते रहना चाहिए।

Scanned by TapScanner